



## लखिया सामान्य परेम कहानी

लखिया रामनारायण पाठक की पुत्री थी. रामनारायण पाठक पेशेवर शिक्षक थे, पर लक्ष्मी की उनपर विशेष कृपा नहीं थी. परिवार के भरण-पोषण के बाद वे बमुश्किल ही कुछ जोड़ पाते थे. उनकी आमदनी तो वैसे दस हजार मासिक थी, लेकिन खर्च भी कम कहाँ था ? हाथ छोटा कर वे जो भी जोड़ते पत्नी की दवा-दारू में सब हवन हो जाता था. उनका परिवार बहुत बड़ा नहीं था. वे लोग गनि-चुने चार सदस्य थे - दो बेटियाँ और अपने दो. बड़ी लड़की लखिया आठ वर्ष की थी और छोटी मतिरा पांच की. उसकी पत्नी भगवती खूब धरम-करम करती कति, अपने पेट की पीड़ा से वह पीछा नहीं छोड़ा पाती थी. पाठक जी ने उसके पेट की पीड़ा के लिए क्या नहीं किया, कई शहरों के नामी-गरामी डॉक्टरों से इलाज करवाए, लेकिन आजकल की बीमारियों पर तो आग लगे छूटने के नाम ही नहीं लेती ?

एक दिन अचानक रामनारायण पाठक दुनियादारी से मुक्त होकर चरिस्थायी नदिरा में लीन हो गए. भगवती की दशा अब आगे नाथ न पछि पगहा वाली हो गई थी. घर के मुखिया का इस तरह अचानक चल बसना अच्छे-अच्छों को भी तोड़ कर रख देता है और भगवती तो ठहरी सदा पेट की बीमारी से परेशान रहने वाली एक मरीज. अब उसे जीने की कोई इच्छा नहीं थी कति, अपनी बेटियों के लिए उसे जीना जरूरी था. वह जन्दिगी से भाग नहीं सकती थी. जीवन में सुरसा की तरह मुंह फैलाए खड़ी चुनौतियों से उसे जूझना ही था. उनसे आर-पार की लड़ाई लड़नी ही थी. उसे कृष्ण बनकर जीवन की इस रणभूमि में अपनी बेटियों का मार्गदर्शन करना था. आगे की चुनौतियों ने अपने पति के वषाद में डूबी भगवती को झकझोर कर रख दिया था. उसे जल्द ही संभलने पर मजबूर कर दिया था. उसने भी मरते दम तक चुनौतियों से लड़ने का प्रण ले लिया था. आस-पास के छोटे-छोटे बच्चों को ट्यूशन पढ़ाकर वह अपने जीवन की गाड़ी तलि-तलि आगे बढ़ाने लगी थी. अपनी दोनों बेटियों की परवरिश में उसने खुद को पूरी तरह समर्पित कर दिया था. कौन जाने कसिका भाग्य में क्या लिखा है ?

लखिया बड़ी रूपसी थी और स्वभाव से उतनी ही चुलबुली भी. यौवन की दहलीज पर पांव रखते ही उसके रूप ने अद्भुत नखिल ले लिया था. यौवन की मादकता आंखों में तरिछी चतिवन बनकर, अधरों पर मधुर मुस्कान बनकर और बदन में आलस्य बनकर प्रकट होने लगी थी. उसने वशिव को मोह लेने वाला जगमोहनि रूप पाया था. गांव भर में वह सुन्दरता की मसाल थी. वहां के लोगों को अपनी इस बटिया पर फखर था. मडिलि पास कर अब वह हाई स्कूल में दाखलि हो गई थी. उसके मन में तरह-तरह के सपने पलने लगे थे. उसकी महत्वाकांक्षाएं लताओं की भांति डिगडगाती हुई शखिर की ओर बढ़ने लगी थी. बचपन से ही उसपर जन्दिगी के कड़े सच का दंश पड़ने लगा था. मुश्किलें इंसान को मजबूत बनाती हैं. पति की मृत्यु के बाद लखिया को सरिफ और सरिफ परेशानियाँ ही नसीब हुई थी, जसिने कम उमर में ही उसे काफी परपिक्व कर दिया था. वह खूब पढ़ना चाहती और आगे बढ़कर समाज के लिए कुछ करना चाहती थी, कति कभी-कभी घर की माली हाल उसे दुष्चति में डाल देती थी. उसका मन उदास हो जाता. सारा जोश, जुनून ठंडा पड़ जाता. कति, भगवती उसे सदा प्रोत्साहति करती रहती थी.

लखिया अब सयान हो गई थी. वह कॉलेज में दाखलि ले चुकी थी. उसका स्वभाव भी काफी बदल गया था. अब वह शर्मिली, संकोची और गंभीर स्वभाव की हो गई थी. सबसे नज़रे बचाती हुई वह कॉलेज आया-जाया करती थी. लोगों की कुदृष्टि का उसके मन में भय बना रहता था. वह एकदम पग-पग सचेत रहती थी. आए दिन देश-दुनिया में हो रही घटनाओं से भगवती का कलेजा कांप उठता था. बेटि को वह हमेशा सावधान करती रहती थी. दुनिया में कुछ लोग बड़े नरिमोही होते हैं. दूसरों की खुशी उनकी आंखों की करिकरि बन जाती हैं. दूसरों के सुख-चैन लूटने में उन्हें वैसे ही आनन्द मलिता जैसे कसाई को नरिह पशुओं के कत्ल करने में मलिता है. खासकर लखिया जैसी खूबसूरत कलियों पर तो उनकी गदिध दृष्टि बनी रहती है. उनकी रसीली जीभ लपलपाने लगती है. उनकी आंखों में हैवानयित का खून चढ़ आता है. वे अपना होशोहवास गंवा बैठते हैं और खलिने से पहले ही उस कली को अपने कठोर हाथों से मसल कर नष्ट कर देते हैं.

लखिया खूबसूरत थी. नवयुवकों का उसके प्रति आकर्षति होना तो स्वभावकि था. कॉलेज में कई लड़के उसके आगे पीछे मंडराते रहते थे. कति, उनकी नयित बुरी नहीं थी. उमर का तकाजा था कि वे बस ऐसा स्वभावकि रूप से ही कर रहे थे. लखिया से उनकी नजरें टकरा गई या कसि बहाने उससे दो दूक बातें हो गई तो वे खुश हो जाते थे. गर्व से खुद की पीठ थपथपा लेते थे. लखिया को उन लड़कों से कोई भय नहीं था. उसे भय तो सरिफ ललन से था. ललन बड़े बाप की बगिडेल औलाद था. दिन-रात वह अपनी ऐययासी में लगा रहता था. दुनिया की कोई ऐसी बुरी आदत शेष नहीं बची थी, जसि उसने नहीं अपनाई हो. डरग से लेकर जुआ तक कुछ भी उससे अच्छता नहीं था. उसका बाप धुरंधर सहि भी कुछ वैसा ही दबंग कसिम का आदमी था. वह उस इलाके का कोयला माफिया का डॉन था. वहां की पुलिस भी उसके द्वार पर हाजरि देने जाती थी. उसकी करतूतों से जन-जन



परचिति था कति, कसिी के पास उसके वरिद्ध मुंह खोलने की ताकत नहीं थी. उसके वरिद्ध जाने वालों को अह सीधे उठवा देता था.

ललन उसी कॉलेज में पढ़ता, जहां लखिया पढ़ती थी. बाप का ही पानी बेटा ने भी लिया था. अभी से ही बाप की तरह उसने भी दबंगाई शुरू कर दी थी. कॉलेज आना-जाना तो वैसे वह कम ही करता था. उसका ज्यादा समय तो घर और कॉलेज से बाहर ऐय्यासी करने में ही बतित्ता था. कति, वह जब भी कॉलेज आता वहां हड़कंप मच जाता था. वहां की लड़कियां इधर-उधर छपिती फरिती और भय से कोई भी उसके सम्मुख नहीं आती थी. कसिी लड़की पर अगर उसकी बुरी नजर पड़ गई तो फरि उसकी खैर नहीं. उसकी इज्जत-आबरू बच नहीं पाती थी. कॉलेज की कई लड़कियां उसके हवश का शकिार हो चुकी थी. उसके खलिफ पुलसि, थाने सब कुछ हुआ था लेकिन, ढाक के वही तीन पात. आज तक उसे कोई सजा नहीं दलिवा पाया था. उसकी बुरी नजरों से बच कर रहने में ही सबको बुद्धमिनी लगती थी.

एक दनि अचानक लखिया का ललन से सामना हो गया था. वह कॉलेज से बाहर नकिल ही रही थी कअिचानक कॉलेज के प्रवेश द्वार पर उसे अपने दोस्तों के साथ आता हुआ ललन मलि गया. वह डरी सहमी सरि झुकाए, कतिबों को सीने से लगाए आहसिता-आहसिता आगे नकिल गई थी. शुक्र था कउसने लखिया को सरिफ घूरकर देखा ही था. उसने ना कसिी तरह की रोक-टोक की और ना ही उसके साथ कोई बदतमीजी की. वरना उसकी आदत इतनी अच्छी कहां थी ! वह तो लड़कियों को सीधे छेड़ना शुरू कर देता था. बदतमजिी पर उतर आता था.

लखिया सुन्दर थी इसीलिए वह ललन को पहली नज़र में ही भा गई थी. उसके दलि के कसिी कोने में उसने कम्पन्न पैदा कर दयिा था. धीरे-धीरे वह लखिया का आशकि बन गया. ये प्यार-व्यार भी क्या चीज है आज तक कसिी को समझ नहीं आया है. इसकी ना कोई परभिषा है, ना रूप, ना रंग, ना गंध. ढाई अक्षर के इस शब्द में ही सारा जादू समाया हुआ है, जसिने ना जाने कतिनों को मजनु, रांझा और फरहाद बना डाला है. आज उसी जादू के भंवर में एक और हलाल हो गया था. ललन का वैसे ही ज्यादातर समय सुन्दर-सुन्दर लड़कियों की बाहों में ही गुजरता था कति, उनमें से कसिी से उसे प्यार नहीं हुआ. उसके दलि की गाड़ी गांव की भोली-भाली नरिदोष बाला लखिया पर जा अटकी थी. दोनों के बीच कतिनी असमानताएं थी. ललन जहां बुराइयों के कीचड़ से लथपथ था, वहीं लखिया मानसरोवर में खलि कमल की ताजी पंखुड़ियों सी नरिमल. ललन नरिठुर पाषाण दलि था तो लखिया शरदकाल की अलसाई सुबह में दूब पर पड़ी ओस की बूंद की तरह कोमल.

“साले जो भी हो कति, लखिया है बड़ी सुन्दर” - एकदनि ललन ने बातचीत के दौरान अपने दोस्तों से कहा.

कौन लखिया ? - उसके दोस्तों ने हैरानी से पूछा.

वही नई लड़की, डरी सहमी-सी नज़रे झुकाए चलने वाली. - ललन ने शब्दों के अनुरूप अपना सर हलिते हुए कहा.

उसके दोस्तों को बड़ा आश्चर्य हुआ. आज तक उसने कसिी भी लड़की को उसका नाम लेकर संबोधति नहीं कयिा था. उसकी जुबान पर लड़कियों के लिए बस ‘लौडयिा’ शब्द ही आता था. लड़कियों के प्रतिनि तो उसके मन में कोई सम्मान था और ना ही इज्जत. उन्हें केवल वह उपभोग की वस्तु मानता था. कति, आज अचानक लखिया के लिए उसके मन में सम्मान देखकर उनके दोस्तों को हैरानी हुई.

क्यों आपको उसका नाम कैसे पता ? - एक दोस्त ने पूछा.

ललन मुस्कराते हुए बोला - मैंने उसकी बायोग्राफी पता कर ली है. वह बसिनपुर के स्वर्गवासी शकिषक रामनारायण पाठक की बेटि है. ईमानदारी के क्षेत्र में उसके पतिजी का काफी नाम था. पापा बता रहे थे कअि एक बार उसके साथ पापा का भी पंगा हो गया था. वह पापा को अंदर करवाने की धमकयिां भी दे गया था कति, कस्मिमत से वह खुद ही ऊपर चला गया था, वरना पापा को ही अपना हाथ गंदा करना पड़ता.

तो तू उसपर इतना हमदर्दी क्यों जता रहा है ? - दूसरे दोस्त ने पूछा.

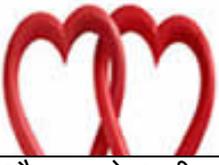
एकचुअली वह मुझे बहुत प्यारी लगती है. उसे देखते ही मेरे दलि में कुछ-कुछ होने लगता है. - ललन ने कहा.

तब बताओ. कब तुम्हारी सेवा में उसे हाजरि करूं ? - तीसरे दोस्त ने कहा.

नहीं...नहीं उसके साथ मैं ऐसा नहीं कर सकता. उसे दुख होगा. मैं तो उसे दलि की रानी बनाना चाहता हूं. उसका सच्चा प्यार पाना चाहता हूं. उसके मन को जीतना चाहता हूं. तुम लोग उसके साथ कोई बदतमीजी मत करना - ललन ने सभी को चेताया.

कॉलेज में कई बार लखिया का सामना ललन से हुआ कति, उसके साथ कसिी प्रकार की कोई बदतमीजी नहीं हुई. धीरे-धीरे लखिया के मन में ललन से जो डर था वह जाता रहा. ललन के स्वभाव में भी काफी बदलाव आ गया था. उसने भी अपनी बुरी हरकतें कम कर दी थी. कम से कम कॉलेज में तो उसने शराफत दिखानी शुरू कर दी थी. अब ना कसिी लड़की को वह छेड़ता और ना ही कसिी के साथ कोई बदतमीजी करता. उसने अपनी पाश्वकिता त्याग दी थी और इनसान के दल में शामिल होने के लिए वह पंक्ति में खड़ा हो चुका था.

एक दनि उसने कॉलेज कैम्पस के बाहर रास्ते में लखिया को रोक कर कहा - लखिया ! मैं तुम्हें चाहने लगा हूं



और तुमसे शादी करना चाहता हूँ.

लखिया ने कुछ जवाब नहीं दिया और वह आगे बढ़ गई. लड़कियों की चुप्पी में ही हां छुपि होता है इसी मानसकिता में आधी दुनिया जीती है. इसी मानसकिता की वजह से ना जाने कतिने आशकियों के दिलि का आशयिना उजड़ा है. कतिने देवदास बनकर दर-दर भटकते रहे है. कतिनों ने अपना सुख-चैन गंवाया है और ना जाने कतिनों ने अपनी जान गंवाई या फरि नरिदोष लड़कियों पर आफत दायी है.

ललन भी आज उसी मानसकिता का शकिर हुआ था और उसने मन ही मन मान लिया था कलिखिया को उसका प्रस्ताव मंजूर है लेकिन, वह शर्म से बोल नहीं पा रही है. अपने दोस्तों में भी उसने यह बात फैला दी. शीघ्र ही यह बात पूरे कॉलेज में वायरस की तरह फैल गई. लखिया से कई सवाल होने लगे, जिसका कोई जवाब उसके पास नहीं था. कुछ लड़कियों ने तो उसवपर ताना कसना भी शुरू कर दिया था. सबकी नज़रों में वह गरिने लगी थी. कॉलेज के इस माहौल में उसका दम घुटने लगा था. कॉलेज में उसके बारे में हो रही तरह-तरह की बातें अब उसके बर्दाश्त से बाहर हो गई थी. एक दनि तंग आकर उसने ललन से ही दो- दो हाथ कर लेने का फैसला कर लिया.

तुम्हारी हमिमत कैसी हुई मेरे बारे में ऐसी अफवाह फैलाने की ? कसिने कहा कि मैं तुमसे शादी करने के लिए तैयार हूँ ? मेरी कसिमत फ़ूटी नहीं है, जो मैं तुमसे शादी करूंगी. तुम्हारे जैसे गुंडों से शादी करने से भला है कि मैं गंगा में कूद कर अपनी जान दे दूँ - सबके सामने उसने ललन को एक दनि झाड़ लगा दी.

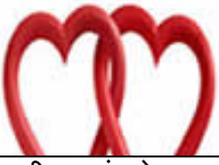
उस दनि के बाद वह कॉलेज में बहुत कम ही दखिी. कॉलेज से एक तरह से उसका मन घबरा गया था. कॉलेज की सारी बातें उसने अपनी मां को बता दी. मां का दिलि घबरा गया. उस दबंग के वरिद्ध जाने का मतलब खुद के ही पांव में कुल्हाड़ी मारना था. उसकी मां ने भलाई इसी में समझी कि कहीं कुछ ऊंच-नीच हो जाए इससे पहले बेटी की शादी कहीं कर दी जाए.

आज भगवती के घर खूब चहल पहल थी. आपुस कुटुम्ब लगन-हांडी के साथ एक-एक कर उसके घर आ रहे थे. आस-पास की स्त्रियां अतथियों की द्वार छेकाई कर उनकी आव-भगत करने में व्यस्त थी. सबके मुखमंडल पर आनन्द और खुशी के भाव नाच रहे थे. भगवती मशीन-सी दौड़ती फरिती सबको अलग-अलग कामों की जमिमेदारियां सौंप रही थी. घर की सजावट का काम भी पूरा हो चुका था. खर्च के हसिब-कतिब की जमिमेदारी भगवती का भाई दीनानाथ संभाल रहा था. लखिया की शादी में बस दो दनि शेष रह गए थे. मन में वह शादी को लेकर उत्साहति थी कति, अंदर से भयभीत भी. ज्यों-ज्यों शादी का समय नकिट आ रहा था उसके दिलि की धड़कन बढ़ती जा रही थी. आस-पास की हमउम्र लड़कियों उसके घर आकर वहां के वातावरण को गीतमय कर रही थी.

वह दनि भी आ गया, जिसका सभी को बेसबरी से इंतजार था. आज लखिया के लिए दूर शहर से कोई डोली सजाकर उसे लेने आ रहा था. लखिया भी दुल्हन के रूप में पूरी तरह सज संवर कर तैयार थी. लखिया तो सुन्दर थी ही कति, दुल्हन के रूप में तो वह अद्भुत लग रही थी मानो स्वर्ग से कोई परी उतर आई हो. वहां का पूरा माहौल आनन्दमय था. भगवती बाहर से प्रसन्न होने का दखिवा कर रही थी कति, अंदर ही अंदर वह कलप रही थी. उसने अपना खून से सौंचकर जगिर के जसि टुकड़े को बड़ा कथिा था, आज वह उससे दूर जा रही थी. लाख कोशिशों के बावजूद भी वह खुद को संभाल नहीं पा रही थी. लखिया ने उसे नहीं रोने की सौगंध दे रखी थी कति, मां की ममता को भला कौन सा बांध रोक पाता है. एकांत पाते ही वह छुप-छुप कर रो लेती लेकिन, सामने वाले को अपना दर्द का अहसास नहीं होने देती. अपने मन को उसने काफी समझाया और दिलि मजबूत कथिा. बेटी पराया धन है एक ना एक दनि तो उसे डोली में बठिकर खुद से दूर करना ही पड़ता. जसिपर अपना कोई वश नहीं चले तो भला अपना दिलि को नाहक छोटा क्यों कथिा जाए ?

रात 8 बजे पूरे गाजे-बाजे के साथ वहां बारात आ गई थी. बाहर नाच-गान की धूम चल रही थी और अंदर वरमाला की रस्म के लिए लखिया के मेक-अप को अंतमि रूप दिया जा रहा था. पटाखों के धूम-धड़ाके के साथ मसती का माहौल बना हुआ था. सभी अपनी-अपनी धुन में मस्त थे. बारातियों का दल बैड-बाजे की धुन पर थरिक रहा था. बारातियों की उसी भीड़ में ललन अपने दोस्तों के साथ वहां आ पहुंचा था. वह शराब के नशे में चूर था. डगमगाते कदमों के साथ वह स्टेज तक पहुंचने का प्रयास कर रहा था. वह लखिया को अपना बनाना चाहता था कति, अब लखिया उसके हाथ से नकिल रही थी. इसीलिए उसकी आंखों में खून सवार हो गया था. उसने ठान लिया था कि अगर लखिया उसकी नहीं हुई तो वह उसे कसिी और की भी नहीं होने देगा. चारों ओर लोग बैड बाजे की धुन में नाच रहे थे. दुल्हा स्टेज पर बैठा था. बारातियों में दुल्हन की झलक पाने की उत्सुकता बनी हुई थी. उसी समय दुल्हन को उनकी सहेलियां वरमाला के लिए स्टेज पर धीरे-धीरे ला रही थी. दुल्हन को देखते ही बारातियों ने उसका जोरदार स्वागत कथिा. तालियों और सीटियों से आसमान गुंज उठा. दुल्हन के पांव होले-होले स्टेज की ओर बढ़ रहे थे. उसकी सहेलियां उसे घेरी हुई थीं. दुल्हन के हाथ में आरती की थाली सजी हुई थी और वह मंद-मंद मुस्करा रही थी.

उधर ललन ताक में था. धीरे-धीरे उसने अपने पॉकटि से रविल्वर नकिल लिया था. वह जल्दी-जल्दी स्टेज के



करीब पहुंचने का प्रयास करने लगा. वहां भीड़ भी खचाखच थी. वह सभी को धक्का देते हुए आगे बढ़ता गया. वह अब स्टेज के काफी करीब पहुंच चुका था, जहां से वह लखिया को पूरी तरह देख सके. उसने रविवॉल्वर को लोड किया और हाथ धीरे-धीरे थोड़ा ऊपर उठाया. भीड़ से नजरें बचाकर वह लखिया के सीध अपना हाथ ले गया और उसके सीने पर सीधा नशिना साधा.

वहां मस्ती भरा माहौल था. महिलाएं अपने मधुर स्वर में नेग गीत गा रही थी. सबके मुखमंडल पर आनन्द ही आनन्द छाया हुआ था. दुल्हन के रूप-लावण्य को देखकर वहां हर कोई मंत्र-मुग्ध था लेकिन, ललन और उनके दोस्तों के दिल की धड़कन तेज हो गई थी. दुल्हन के रूप में लखिया के रूप-सौन्दर्य देखकर ललन के दोस्तों का भी दिल पसीजने लगा था कति, अब वे कुछ नहीं कर सकते थे. वे लोग ललन से बहुत दूर खड़े थे और उस भीड़ में ललन तक पहुंचना उनके लिए असम्भव था. ललन की अंगुली रविवॉल्वर के ट्रीगर को स्पर्श करती हुई उसपर अपनी पोजशिन ले चुकी थी. उसकी आंखों में खून सवार था. ट्रीगर दबाने से पहले वह एक बार लखिया को जी भर कर देख लेना चाहता था. लखिया आनन्दमग्न थी. उसके चेहरे पर अद्भुत-सी चमक आ गई थी. जसि लखिया को उसने अपने सामने हमेशा डर से सहमी हुई देखी थी, उसे आज पूर्ण नडिर और आत्मवशिवास से लबरेज देखकर वह खुद आश्चर्य चकति था. लखिया ने दुल्हे के ललाट पर तलिक लगाकर उसकी आरती उतारी. उसकी सहेलियों ने दुल्हा और दुल्हन दोनों के हाथों में वरमाला दे दी. वरमाला पहनाने के लिए लखिया ने ज्योंही अपना हाथ ऊपर किया ठांय...ठांय...ठांय की जोरदार ध्वनिके साथ तीन गोलियां चल गईं. भीड़ में एकदम-सी भगदड़ मच गई थी. किसी की समझ में कुछ नहीं आ रहा था, बस सब अपनी जान बचाने के लिए बेतहासा इधर-उधर भागे जा रहे थे.

गोलियां चलने की आवाज़ सुनते ही ललन के दोस्त वहां से पलायन हो गए थे और ललन लखिया के पैरों पर गरिकर माफी मांग रहा था. उसकी आंखों में अब खून नहीं बल्कि, पश्चाताप के आंसू थे. उसका नशा उतर गया था और अब वह पूरे होशोहवास में था. अपने दाएं हाथ में वह रविवॉल्वर थामे हुए था, कति उसमें अब गोलियां नहीं थीं. सारी गोलियां उसने हवा में दाग दी थी. लोग अब स्टेज पर जमा होने लगे थे.

अपने घुटनों के बल बैठकर उसने लखिया से कहा - लखिया मुझे माफ कर दो. मैं तुम्हें जान से मारने आया था, क्योंकि तुमने मेरी बात नहीं मानी थी. मुझे छोड़कर तुम किसी और से शादी करने जा रही थी. मुझे इसकी खबर मिलते ही मैं आपे से बाहर हो गया था और अपने दोस्तों के साथ तुम्हें जान से मारने आया था लेकिन, मैं चाहकर भी तुम पर गोली नहीं चला सका और सारी गोलियां हवा में दाग दी, क्योंकि मैं तुमसे बहुत प्यार करता हूं. तुमने मेरी आंखें खोल दी हैं. मैं सचमुच बहुत बुरा हूं. सभी लड़कियां मुझसे डरती हैं इसीलिए कोई मुझसे प्यार नहीं करती. अब तक मैंने सरिफ दूसरों को मजबूर किया था कति, आज तुमने मुझे मजबूर कर दिया है. मेरे पास ऐशोआराम की सारी चीजें हैं फरि भी मैं तुम्हारा प्यार नहीं पा सका, क्योंकि मेरे पास इनसानियत की कमी है. आज मैं तुमसे वादा करता हूं कति अब मैं एक आम इनसान की तरह जनिदगी जीऊंगा. तुम मेरी नसीब में ही नहीं थी इसीलिए रब से दुआ है कति तुम जहां रहो खुशहाल रहो.

तब तक वहां पुलसि आ चुकी थी. थानेदार साहब ने उसे धकियाते हुए उठाया और उसका कॉलर पकड़ते हुए एकदम कड़क आवाज़ में कहा - साले ! गुंडा गर्दी करते हो ? भीड़ में गोलियां चलाते हो ? चलो आज तुम्हें थाने में बदलाता हूं. ऐसी धारा तुमपर ठोकूंगा कति जनिदगी भर जेल में ही सड़ोगे.

हां थानेदार साहब ! इस दरदि को कड़ी से कड़ी सजा दीजिए. इसने मेरी बेटि का जीना मुश्कलि कर दिया था और आज इसे जान से मारने पहुंच गया है, इसे छोड़िएगा मत. - लखिया की मां ने ललन को कोसते हुए कहा. नहीं थानेदार साहब ! इसका कोई कसूर नहीं है. यह मेरा अचछा दोस्त है. हम एक साथ कॉलेज में पढते हैं और आज मेरी शादी में यह मेरे नमिंत्रण पर ही आया था. इसने अपनी खुशी जाहरि करने के लिए आसमान में गोलियां चलाई थी किसी को डराने या हानि पहुंचाने के लिए नहीं. अगर इसे गोलियां चलाने की अनुमतनिहीं है तो आप इस पर कानूनी कार्रवाई कर सकते हैं, अन्यथा इसे प्लीज छोड़ दीजिए. - लखिया ने थानेदार साहब से अनुरोध किया.

ठीक है मैडम ! हम ऐसा ही करेंगे. फलिहाल इसने गोलियां चलाई है इसीलिए थाने ले जाना जरूरी है. - थानेदार ने कहा.

जैसा आप उचति समझे, प्लीज. - लखिया ने कहा.

थानेदार साहब ने अपनी जपिसी में उसे बैठाकर थाने ले गया.

लखिया की मां अपनी बेटि को आश्चर्य से देख रही थी कति आखरि उसने ऐसा क्यों किया ? उसे दण्ड दलाने के बजाय उसका बचाव क्यों किया ?

लखिया समझदार थी. उसे पता था कति उसपर कड़े आरोप लगाकर भी उसे सजा नहीं दलाई जा सकती थी.

थानेदार नया था. उसे ललन और उसके बाप के बारे में पता नहीं था इसीलिए वह हैकड़ी दखि रहा था, वर्ना उसे थाने तक ले जाने की भी हमिमत उसमें कहां होती ? ललन का हृदय परविरतन हो गया था इसीलिए उसे सजा दलिवाकर उसके अंदर छपि जानवर को वह फरि से नहीं जगाना चाहती थी. शादी की रश्मेंफरि से आरम्भ



हो गई. लोग फरि एक बार झूम उठे.

@गोवन्दि पंडति स्वप्नदर्शी